T/W

सारांश.

गिल्लू.

एक दिन लेखिका अपने बरामदे में खड़ी थी, तो अचानक उनकी दृष्टि गिलहरी के छोटे बच्चे पर पड़ी, उस गिलहरी के बच्चा संभवतः घोंसले से गिर पड़ा है। उसे अचेत देखकर लेखिका महादेवी वर्मा ने उन्हें उसे उठाकर घर के अन्दर ले गई। उसके रक्त को पोंछकर घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया। फिर रुई की पतली बत्ती दूध में भिगोकर उससे पिलाने लगी। लेखिका ने उस छोटे गिलहरी के बच्चे का नाम गिल्लू रख दिया। लेखिका के देखभाल के कारण गिल्लू तिसरे दिन तक ठीक हो गया। गिल्लू लेखिका से बहुत प्यार करता था। लेखिका ने फूल रखने की एक हलकी डलिया में रुई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया। वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा। लेखिका ने गिल्लू को मुक्त करना आवश्यक समझा। उन्होंने समझा। उन्होंने कीलें

निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली। वह हमेशा लेखिका के खाने की थाली के पास बैठ उसके साथ ही खाता। गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती। गिल्लू का भी समाप्त हो गया। लेखिका ने गिल्लू की समाधि सोनजुही की लता के नीचे बनाई।